भारत की दशा और दिशा को बदलने के लिए

श्री गुरु तेगबहादुर जी की उपदेश यात्राएँ

प्रो. करमजीत सिंह

गुरु तेगबहादुर जी महाराज के समय भारत पर मुगलों का शासन था। बाबर के नेतृत्व में हिन्दुस्तान पर पहली बार इस जनजाति ने 1519 ई. में सूबेदार दौलत खान लोधी पर हमला किया और उसे हरा दिया, जो उस समय पंजाब में दिल्ली का सूबेदार था। मध्य

एशिया के शासक बाबर ने अंततः पानीपत की लड़ाई में यहाँ के शासक इब्राहिम लोधी को हराकर 1526 ईस्वी में भारतीय उपमहाद्वीप पर विजय प्राप्त की। अब भारत में मुगल साम्राज्य की नींव इसलिए पड़ी क्योंकि जहीरुद्दीन बाबर का उद्देश्य केवल भारत को लूटना नहीं था। उसका असली लक्ष्य इस समृद्ध देश पर कब्जा करना और अपना राज्य स्थापित करना था। बाबर सफल हुआ और देखते ही देखते बाबर के उत्तराधिकारी के नेतृत्व में यहाँ दुनिया का सबसे शक्तिफशाली साम्राज्य स्थापित हुआ। गुरु तेगबहादुर के समय में शासक औरंगजेब था, जिसके अत्याचारों की कहानियाँ आज भी लोगों के जेहन में ताजा हैं। इस देश के निवासियों ने उसके उत्पीड़न को सहना, अपने भाग्य का नसीब माना। असहनीय जुल्मों-सितम और भारी टैक्स ने लोगों का जीना दूभर कर रखा था पर, सभी विवश थे। धीरे-धीरे बाबर के राज्य का विस्तार होने लगा और बाबर की तुलना में भारत के छोटे क्षेत्रों के मालिक बनने वाले राजाओं ने इस विस्तार में अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये सभी छोटे-छोटे राज्य एक-दूसरे से बहुत नफरत करते थे। भारत की यह भूमि टुकड़ों में बँटी हुई थी प्रत्येक टुकड़े का स्वामी किसी न किसी रूप में दूसरे की पीठ में छुरा घोंपने को तैयार रहता था। इस सब के लिए वह किसी न किसी तरह से बाबर को प्रोत्साहित करता और मदद का आश्वासन देता ताकि वह अपने पड़ोसी राज्य पर कब्जा कर सके और शाही परिवार का सफाया कर सके। इसके पीछे उनकी बुरी भावना यह थी कि बाबर कुछ समय के लिए भारत में ही रहेगा और लूट के बाद अपने देश 'खुरासान' को लौट जाएगा। उसके जाने से वह अपने पड़ोसी के राज्य पर कब्जा करके अपने राज्य का विस्तार कर सकेगा। उन्होंने स्वप्न में भी नहीं सोचा कि बाबर यहाँ लूटने के लिए नहीं बल्कि इस समृद्ध भूमि पर हमेशा के लिए अपने राज्य का झंडा फहराने आया है। बाबर इन छोटे राजाओं की चालाकी को समझ गया, परिणामस्वरूप उसने इन छोटे राज्यों को अपने पैरों के नीचे रौंद दिया और यहाँ तक कि बाबर को उसके पड़ोसी राज्य को मारने के लिए हर तरह से मदद करने वाले भी नहीं बचे। भारत के राजाओं की यह बुरी सोच निश्चित रूप से भारत की गुलामी का मुख्य कारण थी।

बाबर के बाद उसका पुत्र हुमायँु राज गद्दी पर बैठा, जो विद्वान तो था परन्तु दूरदर्शी नहीं था। परिणामस्वरूप, एक अन्य मुस्लिम सेनापति, शेर शाह सूरी ने उसके क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और हुमायूँ को अपनी जन्मभूमि में भागना पड़ा। हालांकि शेरशाह सूरी ने बहुत कम समय तक शासन किया, पिफर भी उनके शासनकाल को 'स्वर्ण युग' के रूप में याद किया जाता है। भारत में उनका महत्त्वपूर्ण कार्य जो

आज भी शेरशाह सूरी मार्ग के नाम से जाना जाता है। जिसे हमारे समय में ळज् त्वंक.1 कहा जाता है। पूरे भारत को जोड़ने वाला एक हाईवे है। हुमायँु ने अपनी जमीन से पिफर तैयारी की। चुपके से शेर शाह सूरी के सेनापति को खरीद लिया। उस पर हमला किया। शेर शाह सूरी के शासन को उखाड़ फेंका और मुगल सरकार का पुनर्निर्माण किया। हुमायँु के बाद उसका पुत्र अकबर गद्दी पर बैठा, जिसने केवल सुन्दर और दूरदर्शी दृष्टि से भारत की तकदीर ही नहीं बदली बदली बल्कि उसने भारत के लोगों के दिलों पर शासन किया, उन्हें समान अधिकार दिए, जिससे लोगों का जीवन खुशहाल हो गया। अकबर के बाद उसका पुत्र सलीम जहाँगीर उपाधि के साथ भारत का शासक बना। जहाँगीर का पालन-पोषण एक कट्टöर मुसलमान की देखरेख में हुआ। नतीजतन, उसने भारत पर कट्टöरपंथी शरीयत का शासन थोप दिया। कापिफर और मोमिन दो पक्ष सामने आ गए। भारत के मूल निवासी जो अन्य धर्मों के अनुयायी थे, जहाँगीर के राज्य में कापिफर घोषित कर दिए गए। उन पर कई धार्मिक टैक्स लगाए गए, जिससे उनका जीवन दयनीय हो गया। लोग

घबराने लगे। उन्होंने भारत के मूल निवासियों के उत्पीड़न की इन्तहाँ कर दी। जहांगीर के इन अत्याचारों ने सिख धर्म को भी छुआ। जहांगीर के परदादा बाबर ने अनजाने में गुरु नानक पातशाह को रिहा करने के लिए माफी मांगी थी, लेकिन जहांगीर के आदेश पर पाँचवें गुरु पातशाह अर्जुन देव जी को लाहौर में शहीद कर दिया। नतीजतन, गुरु के अनुयायियों और मुगल बादशाहों के बीच दुश्मनी की दीवारें खड़ी हो गईं। जहाँगीर के बाद, शाहजहाँ सिंहासन पर चढ़ा और शाहजहाँ के बाद, उसके बेटे औरंगजेब, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, गुरु तेगबहादुर के समय में औरंगजेब के नाम पर भारत के राज्य का मालिक था और औरंगजेब मुगल सम्राटों में सबसे कट्टöर मुस्लिम था।।

यात्र का उद्देश्य

औरंगजेब ने अपनी तानाशाही से हिंदू समाज में हलचल मचा दी थी। लोग डर गए और उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि औरंगजेब का वंश नष्ट हो जाए और ऐसा दिव्य प्राणी इस धरती पर आए जो इस पापी राज्य का अंत कर दें ताकि वे अपनी धरती पर राहत की सांस ले सकें। भारत भूमि पर, दैवी-पुरुष श्री गुरु तेगबहादुर साहिब 'नानक गुरुगद्दी' पर नौवें स्वरूप में सुशोभित थे और वे पूरे वातावरण को बहुत ध्यान से और करीब से देख रहे थे। उन्होंने भारत की दशा और दिशा को बदलने का संकल्प लिया। उन्होंने भारत के लोगों के मनोबल को बढ़ाने के लिए धार्मिक तीर्थयात्र करने और जनता को यह संदेश देने का मन बना लिया कि 'भय काहू को देत नहि, न भय मानत आनि'। ऐसे समय में गुरु नानक पातशाह के उत्तराधिकारी से केवल एक ही उम्मीद की जा सकती थी कि इस संकटपूर्ण और अशांत समय में लोगों को धैर्य दें और उनका मनोबल बढ़ाएं। गुरु महाराज ने अपने परिवार और अपने सिख सेवकों के साथ सुदूर पूर्व की यात्र की। इन यात्राओं के दौरान उनके कई उद्देश्य थे। सबसे पहले, वह संगतों से मिलना चाहते थे और उन्हें दर्शन देकर सिख सिद्धांत को सुदृढ़ करना चाहते थे, जिसकी स्थापना इस धर्म के संस्थापक गुरु नानक जी महाराज ने की थी। दूसरा, वह ऊपर बताए गए लोगों का मनोबल बढ़ाना चाहता था, तीसरा, उनका मन्तव्य ऐसे काम करने का था जिससे लोगों का जीवन खुशहाल और अधिक आरामदायक हो।

गुरुजी की यात्रा

बेशक, पंजाब में वर्तमान हरियाणा में सुदूर पूर्व का सटीक मार्ग ज्ञात नहीं है कि वे कहाँ कहाँ और किन किन रास्तों से होते हुए गये। लेकिन कुछ सिख ग्रंथ जैसे साखी पोथी, सूरज प्रकाश और पंथ प्रकाश आदि में कुछ विवरण निश्चित रूप से जरुर मिल जाते हैं। बेशक इन नामित स्थानों के अलावा और भी कई गाँव, कस्बे और शहर होंगे जहाँ गुरु पातशाह के चरण पड़े होंगे लेकिन यहाँ हम उपरोत्तफ ग्रंथों के आधार पर उनकी यात्राओं को बहुत संक्षेप में बताने का प्रयास करने जा रहे हैं।

गुरु तेगबहादुर जी की यात्रा

प्रसिद्ध इतिहासकार डाॅ. कृपाल सिंह के अनुसार, गुरु तेगबहादुरजी ने फ्चक्क नानकीय् की स्थापना के बाद पूर्व की ओर अपनी यात्र शुरू की। इस यात्र के पीछे गुरु महाराज का एक विशेष उद्देश्य था जिसका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। पंजाब में वे रोपड़ जिले के दुगरी, कोटली और घड़ूआंक्ष फतेहगढ़ साहिब में नंदपुर, कलौड, रैले, बहोड, भगताना और दादूमाजरा शामिल हैंक्ष जिला पटियाला के उगाणी, टहिलपुर, सैफाबाद, बीवीपुर खुर्द, नौलखा, लंग और गुनिके, संगरूर में भवानीगढ़, मूलोवाल, गागा, मरोकड़ साहिब गुरनाक्ष बरनाला में सेखा, हडीयाइया, सोहिवाल, पंढेर, ढिलवाँ मौडक्ष मनसा में अलीशेर कलां, गोबिंदपुरा, जोगा, भूपाल, खिवा कलां, भीखी, खियाला कलां, कोट धर्मू, बरेडक्ष भटिंडा में दमदमा साहिब, मौड आदि में स्थानों को निहाल करते हुए वर्तमान हरियाणा के जिला जींद के पिंड धमधान (जहाँ पातशाह की गिरफ्रतारी के विषय में भट्टठ वहियों और महिमा प्रकाश मिलता हैद्ध कैथल, बणी बदरपुर,सुफैल, बारना, कुरुक्षेत्रा, थानेसर से पूर्व का रुख कर लिया। गुरुजी का उद्देश्य लोगों को मुत्तफ करना, सही रास्ता दिखाना और शोषण से उनकी मुत्तिफ के लिए एक उपाय करना भी था। इस तीर्थ यात्र के दौरान, गुरु ने जहाँ भी किसी को गरीब या दुखी देखा, उन्होंने गुरु की गोलक खोल दी और करनाल के पास पहुँचते ही, उन्होंने धन से भरी थैली को एक यात्राी को दिया। उस पैसे से लोगों का उपकार करने के लिए कुएँ खुदवाए और वृक्ष लगवाए। उसी बदर या झोला की कृपा से उस नगर का नाम बदरपुर पड़ा। बदरपुर से गुरु जी कड़-माणकपुर पहुँचे, जहाँ उन्होंने एक योगी का (खाने-पीने संबंधीद्ध भ्रम दूर किया। कड़-माणकपुर, वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य का एक प्रमुख शहर है, हिंदू धर्म स्थान प्रयाग से लगभग 50 मील की दूरी पर गंगा के तट पर स्थित है। गुरु पातशाह ने उस स्थान पर निवास किया। उस स्थान पर मलुकदास नाम का एक वैष्णव संत था। जिसके मन में कई शंकाएँ थीं। गुरु पातशाह ने उसकी कुटिया में जाकर निवास किया और उसके सारे भ्रम दूर किये। जो उसे विचलित कर रहे थे और उसकी भत्तिफ में रूकावट बने हुए थे। मलूक दास को आशीर्वाद मिला, गुरु पातशाह का शिष्य बना और एक सिख साथी के रूप में सिख धर्म के प्रचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे। इस मिलाप का उल्लेख सूरज प्रकाश ग्रंथ में भी मिलता हैः

चैपई

कड़े सु मानिकपुर दे राहु। गमने सतगुरु बेपरवाहु। सुनियत मलूकदास भरमायहू। संक मान महि नहि भायहु। कहयौ-बैसनो मत है मेरो। सतिगुर माॅस अहारी होएरो।

कड़-माणकपुर से गुरु जी मथुरा, आगरा, इटावा होते हुए प्रयाग (इलाहाबादद्ध पहुँचे। इलाहाबाद इस राज्य का एक और महत्त्वपूर्ण शहर है। जिसकी आज भी भारत के सभ्य शहरों में प्रशंसा की जाती है। गुरु पातशाह के समय में इस शहर को प्रयाग के नाम से जाना जाता था। इस शहर की सुंदरता यह थी कि यह तीन नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम था, जिसने इसे हिंदू धर्म में मुत्तिफ का प्रतीक बना दिया और धार्मिक साहित्य में त्रिवणी भी कहा। इसके ऐतिहासिक महत्त्व का अंदाजा इसी बात से भी लगाया जा सकता है कि भारत के सम्राट अकबर ने मध्य भारत पर नजर रखने के लिए यहाँ एक विशाल किले का निर्माण कराया था। सिख परंपरा के अनुसार, गुरु महाराज यहाँ लगभग छह महीने तक रहे। जिस स्थान पर वे स्थित थे वह एक बुजुर्ग माँ का घर था जो नानक घर की भत्तफ थी। इस स्थान की महिमा का उल्लेख कवि संतोख सिंह और अन्य लोगों ने किया हैः

जल उज्ज्वल, श्यामल बारी। सरस्वती बिदताई माझारी। पाप अनेकनि कतरनी छैनी। बड सोभा तिह होती त्रिबेनी।

अर्थात्् एक तरफ तेज पानी था तो दूसरी तरफ काले रंग का जल था, उसमें सरस्वती प्रकट हो रही थीं। यह संगम अनेक पापों का नाश करने वाला है। गंगा, यमुना और सरस्वती तीनों नदियों का संगम बेहद खूबसूरत है।

दो महीने प्रयाग में रहने के बाद गुरु बनारस के लिए रवाना हो गए। बनारस के लोग गुरु नानक के समय से ही गुरु के घर के दीवाने हो गए थे और उनके आगमन पर गुरु तेगबहादुरजी का गर्मजोशी से स्वागत किया। काशी से गुरु जी सासाराम पहुँचे, जहाँ से चाचा फग्गू ने अपनी हवेली के दरवाजे इतने बड़े कर दिए थे कि जब गुरु जी सासाराम आए तो वे घोड़े से उतरे बिना ही हवेली में प्रवेश कर सकें। दरअसल गुरु जी सासाराम अपने सिक्ख की मनोकामना पूरी करने ही गए थे। सासराम से गुरु जी गया पहुँचे।

यह शहर गंगा के किनारे स्थित होने के कारण हिंदुओं के लिए बहुत पवित्र माना जाता है। अपने मृत पूर्वजों की मुत्तिफ के लिए हिंदू इस स्थान पर 'पिंडदान' करने आते थे। दरअसल, यह पुजारियों द्वारा आम लोगों की लूट का आवरण था और यह लूट सदियों से चली आ रही थी। गुरु पातशाह की महिमा देखकर पांडे ने गुरु पातशाह से उत्साह से मुलाकात की। उनके मन में यह ढोंग था कि वे गुरु पातशाह को अपने भ्रम में फँसा लेंगे और उन्हें अच्छी तरह से लूट लेंगे। गुरु पातशाह ने मुस्कुराते हुए पंडितों के साथ एक प्रवचन किया और उनका झूठ उजागर किया और लोगों को समझाया कि मोक्ष का एकमात्र तरीका नाम सिमरन है। जब पंडितों ने अपना गुस्सा व्यत्तफ किया, तो गुरु पातशाह के आदेश पर, औरंगजेब के सेनापति राजा राम सिंह ने पंडितों को निष्कासित कर दिया और कहा कि अगर उन्होंने पिफर से अपने पाखंड से लोगों को लूटने की कोशिश की, तो उन्हें कड़ी सजा दी जाएगी। पंडितों ने डर के मारे पत्र पढ़ा। जिस स्थान पर पंडितों से परामर्श किया गया था, वहाँ अब एक सुंदर गुरुद्वारा बनाया जा रहा है। गया से, गुरु पातशाह का मुख अब पटना की ओर था, जो अब 'पटना साहिब' के रूप में प्रतिष्ठित है, और यहाँ पर सिखों का तख्त सुशोभित है। ध्यान दें कि पटना वर्तमान में बिहार राज्य की राजधानी है और भारत

के सबसे पुराने शहरों में से एक है। पुराने दिनों में उन्हें 'पाटलिपुत्रा' के नाम से जाना जाता था। गंगा और गंडक नदियों का संगम इस शहर के बहुत करीब है। गुरु महाराज के समय यह शहर राजा फतेह सिंह मैनी का था और उनकी गिनती गुरु नानक के घर के अनुयायियों में होती है। ऐसा माना जाता है कि जब मैनी को गुरु महाराज के पटना आने की खबर मिली तो वह अपने परिवार के साथ गुरु पातशाह के स्वागत के लिए दौड़ पड़े। गुरु पातसाह दो महीने से अधिक समय तक पटना साहिब में रहे और बंगाल की यात्र करने के लिए परिवार को यहाँ छोड़ दिया। यहीं पर बाल गोबिंद जी का प्रकाश 1666 ई.में होता है, जहाँ उनकी याद में अनेक गुरुद्वारा साहिब सुशोभित हैं। इनमें हरिमंदिर साहिब पटना, गुरुद्वारा गौघाट,

गुरुद्वारा गुरु दा बाग, गुरुद्वारा गोबिंद घाट, गुरुद्वारा मैनी संगत साहिब आदि प्रमुख हैं।

आज भी बड़ी संख्या में गुरु महाराज के बिहारी सिख बिहार के उन स्थानों पर उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं और उनकी यादों को संजोते हैं जो उन्हें समय-समय पर उनकी यात्र के दौरान गुरु महाराज द्वारा दी गई थीं। हैरानी की बात यह है कि कई गाँवों में एक भी सरूप धारी सिख नहीं है बल्कि गुरु ग्रंथ साहिब जी के हाथ से लिखे सरूपों की मौजूदगी इस बात की ओर इशारा करती है। वह गुरु जी अपनी

यात्र के दौरान यहाँ अपने आशीर्वाद से आगे बढ़ते थे। ये बिहारी सहजधारी बड़ी श्रद्धा के साथ उन पवित्र ग्रंथों की देखभाल करते हैं। पटना साहिब से गुरु पातशाह की अगली दिशा ढाका की ओर थी। वह बाड कस्बे शहर से गुजरते हुए मंगेर पहुँचे। मंगेर का स्थान उनकी स्मृति में एक सुंदर गुरुद्वारा से सुशोभित है। इसकी पुष्टि कवि संतोख सिंह के शब्दों से होती हैः

हुते मुंगेर नगर इक भारे। बसहिं बृंद नर गंग किनारे।। श्री सतिगुरु तहि उतरे जाहि। संगति सुनि आई समुदायि।

मंगर से भागलपुर, कंतनगर, राजमहल और मालदा होते हुए गुरु महाराज ढाका पहुँचे। गुरु पातशाह की याद में ढाका में सुंदर गुरुद्वारा सुशोभित हैं। ढाका में ही गुरुजी को मिर्जा राजा जयसिंह के पुत्र राम सिंह से मिले, और कामरूप के अभियान में मदद के लिए गुरु से अनुरोध किया। यद्यपि गुरु जी ने एक सशस्त्र योद्धा के बजाय शांति और सुलह के पैगंबर के रूप में असम अभियान में भाग लिया, लेकिन वे दो या तीन आधारों पर राजा राम सिंह के साथ असम जाने के लिए सहमत हुए। पहला यह था कि राजा राम सिंह और उनके पिता, मिर्जा राजा जयसिंह गुरु हरकृष्ण द्वारा दिल्ली बुलाए जाने के समय से गुरुघर के श्रद्धालु बने हुए थे, और गुरु तेगबहादुर को राजा राम सिंह से बहुत प्यार था। दूसरे, राजा राम सिंह को औरंगजेब द्वारा किसी तरह उन्हें दंडित करने के लिए असम में एक अभियान पर भेजा गया था, क्योंकि राजा राम सिंह की हिरासत से शिवाजी बच कर निकल गए थे। औरंगजेब को राजा राम सिंह के बारे में कुछ संदेह था, पहले उसे पदावनत किया और बाद में उसे असम के लिए एक अभियान पर जाने का आदेश दिया। असम अभियान का नेतृत्व बहुत कठिन था। कामरूप की घुमावदार कठिन पहाड़ियाँ, बाढ़ का मैदान और बिफरे नदी, और उससे भी अधिक, राजा राम सिंह को उनके शुभचिंतकों ने असम की भयंकर जादूगरनियों के भयानक जादू से भयभीत कर दिया था। इसलिए राजा राम सिंह अपने साथ कई मुस्लिम

फकीरों को ले गए। उसने गुरु से अपने साथ चलने की विनती की। हो सकता है कि गुरु जी इन कारणों से राजा राम सिंह के साथ असम न भी जाते, लेकिन एक ओर उन्होंने पहले ही असमिया प्रदेशों (धुबरी, आदिद्ध में जाने का मन बना लिया था, जो गुरु नानक जी द्वारा आशीर्वाद प्राप्त था, दूसरी ओर मुगल फौजदार राजा रामसिंह और कामरूप के राजाओं के बीच शांति स्थापित करने के आदर्श के साथ कामरूप जाने के लिए सहमत हुए। कामरूप में, गुरु ने मुगलों और कामरूप राजा के बीच एक समझौता भी किया। कुछ समय असम में रहने के बाद, उन्होंने जगन्नाथ पुरी का भी दौरा किया लेकिन औरंगजेब तेजी से हिंदुओं पर हमला कर रहा था और कई मंदिरों को ध्वस्त कर रहा था। इसलिए गुरु ने पंजाब जाने का मन बना लिया और 1671 ई। में साहिबजादा गोबिंद राय और अपने परिवार को पटना से अपने साथ लेकर आनंदपुर साहिब पहुँचे।

आनंदपुर साहिब पहुँचकर, उन्होंने साहिबजादा गोबिंद राय की बहुआयामी शिक्षा और आसन्न संकट को ध्यान में रखते हुए अपने सभी सिखों को शस्त्र और शास्त्र दोनों में कुशल होने की व्यवस्था की। उस समय पंजाब में धार्मिक जागृति की आवश्यकता थी, इसलिए गुरु ने लोगों का मनोबल बढ़ाने और धर्म का प्रचार करने के लिए पंजाब और मालवा के गाँवों का दौरा किया। आनंदपुर साहिब से चलकर वह कीरतपुर, रोपड़, दादूमाजरा, बस्सी पठान, नौ लाखा, उगालिया, टहिलपुर, सैफाबाद आदि कई गाँवों से होते हुए मूलोवाल पहुँचे। ग्रामीणों ने बताया कि कुएँ का पानी खारा है। गुरु ने स्वयं जल पीकर उस जल को अमृत के समान मीठा बनाया और साथ ही चैधरी जवंदा का अभिमान भी तोड़ा। इसके बाद हडिया गाँव में लोगों की जाति-पाती के भ्रम को दूर करने के लिए उन्होंने

एक तालाब में स्नान किया और सभी को स्नान करने के लिए प्रेरित किया और भक्तफों के कष्टों को दूर किया। हडिया से चलने के बाद गुरु ढीलवाँ किया। ढिलवाँ गाँव में बेहद कमजोर और गरीब ब्राह्मण रहते थे। गुरु पातशाह ने उनकी मदद की ताकि वे अपना जीवन अच्छे से जी सकें। तब गुरु जी लोगों का उद्धार करते हुए भिखी गाँव पहुँचे। वहन का एक सरदार देसू जी जोकि एक सरवर का चेला थाऋ उसका उद्धार किया। इसी प्रकार गुरु जी बठिंडा के गावों से होते हुए, बछौआना, धमधान गाँवों से गुजरते हुए मालवे की यात्र पूरी की और लोगों का आध्यात्मिक रूप से उद्धार किया और गरीबों और जरूरतमंदों को आर्थिक सहायता प्रदान की।

गुरु नानक देव जी ने लोगों के मन को जगाने और अंधविश्वास को दूर करने के लिए चार उदासियाँ (यात्राएँद्ध की-वे खुद पैदल ही लोगों के पास गए। सुनने में आता है कि प्यासे अपनी प्यास बुझाने के लिए कुएँ पर आते हैं लेकिन गुरु नानक खुद प्यास बुझाने के लिए प्यासे के पास गए।

अंत में यह कहना उचित होगा कि गुरु तेगबहादुर ने गुरु नानक की शिक्षाओं के प्रसार और प्रचार के लिए यात्राएँ कीं। तीर्थयात्र का उद्देश्य लोगों का भला करना, उन्हें अंधविश्वास से मुक्तफ करना, उनके बीच की खाई को पाटना, निर्भयता और शत्राुता की अवधारणा को मजबूत करना, शोषण से मुक्तिफ का संदर्भ बनाना आदि था। उन्होंने चार अवधारणाओं को समेकित किया जो उनके द्वारा रचित 59 छंदों में दर्ज हैं।

1.भय न करे

गुरु 16वें श्लोक में कहते हैंः

भै काहू को देत नहि, नहि भै मानत आन।।

कहु नानक सुनि रे मना गियानी ताहि बखानि।। 1।।

अर्थः जो मनुष्य किसी को नहीं डराता और न किसी से डरता

या डराता है-उसे ज्ञानी अर्थात् आध्यात्मिक जीवन का ज्ञान रखने वाला माना जाना चाहिए।

2.चिंता न करें

श्लोक 51 में गुरु कहते हैंः

चिंता ताकि कीजिए जो अनहोनी होए।।

इहु मारग संसार को नानक थिर नही कोई।।51।।

अर्थः सारा संसार नाशवान है, जिसका जन्म हुआ है, उसे एक दिन मरना ही है। सबसे बड़ी चिंता मृत्यु है। गुरु जी समझाते हैं कि मृत्यु की चिंता भी अनावश्यक है और इसे स्वीकार किया जाना चाहिए और सतगुरु को साक्षी मानकर धर्म के अनुसार सच्चे कर्म करने चाहिए।

3.दुःख के समय प्रार्थना करें

श्लोक 53 में गुरु कहते हैंः

बल छुटकियो बंधन प्रे कछु न होत उपाई।।

कहू नानक अब अउट हरि गज जिऊ होत सहाई।।53।।

अर्थः जब शत्तिफ चली जाए और आप हर जगह से निराश हो जाएँ, कोई उपाय काम न करे तो भगवान से प्रार्थना करें तब गुरु जी प्राचीन साखी को उद्धृत करते हुए कहते हैं कि जिस तरह हाथी की भगवान ने मदद की, वह हर तरह से आपकी कठिनाई में मदद करेगा।

4.खुशी के समय में धन्यवाद

पद 54 में गुरु कहते हैंः

बल होआ बंधन छुटे सभ किछु होत उपाई।।

नानक सभ किछु तुमरै हाथ में तुम ही होत सहाई।।

भावार्थ: जब बल आये, सब सुख आये, सारी कठिनाइयाँ, बंधन समाप्त हो, तब ईश्वर का धन्यवाद करो क्योंकि तुममें कोई अभिमान नहीं है कि मैंने कुछ हासिल किया है-जो कुछ भी आपको मिलता है वह उसका (ईश्वरद्ध ही आशीर्वाद है।)